Paper II

Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part - I (Hons.)

The Emergence of Sociology

कोई भी विज्ञान शून्य से आरंभ नहीं हो सकता है और यह बात समाजशास्त्र के साथ भी लागू होती है। इस संबंध में बीयरस्टेट का यह विचार उल्लेखनीय है कि "Sociology has a long past but only a short history."

अर्थात् समाजशास्त्र की विषय वस्तु काफी पुरानी है। इस विषय की उत्पत्ति के पहले भी उस पर चिंतन होते रहे हैं, लेकिन उन विषय-वस्तुओं पर एक स्वतंत्र विषय के अंतर्गत वैज्ञानिक ढंग से चिंतन कुछ दिनों पहले आरंभ हुआ।

टी. बी. बॉटोमोर ने समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास के प्रमुख चरणों की चर्चा की है, जो इस तरह से है -

प्रथम चरण - प्राचीन यूनान के दो प्रमुख विचारकों में प्लेटो और अरस्तु के विचार महत्वपूर्ण हैं। प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध कृति The Republic एवं अरस्तु ने अपनी प्रख्यात पुस्तक Ethics and Politics में तत्कालीन सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं से संबद्ध चर्चाएँ की हैं। इन पुस्तकों में पारिवारिक जीवन, रीति रिवाज, [illegible]

की स्थिति आदि का एक स्पष्ट वर्णन मिलता है। इन तमाम विचारकों की कृतियां अपने अपने समाज की समस्याओं के बारे में वर्णन करती हैं। समाजशास्त्र की ये रचनाएं आगे चलकर काफी उपयोगी सिद्ध हुई।

द्वितीय चरण – मोटेतौर पर इसमें 6वीं से 14वीं तक शताब्दी का काल आता है। इस पूरे चरण में सामाजिक जीवन की अधिकांश व्याख्याएं दार्शनिक ही हुआ करती थीं, जिसमें समय-समय पर धर्म का भी सहारा लिया जाता था। दूसरे चरण के अंत में कुछ ऐसे भी चिंतक मिलते हैं जिनके विचारों से यह मालूम होता है कि इस काल में दर्शन और धर्म की जगह तर्क प्रधान हो गया। इस काल के प्रमुख विचारकों में अक्युनास और दांते का नाम महत्वपूर्ण विचारक हुए। इन विचारकों ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी ही नहीं माना बल्कि समाज की परिवर्तनशीलता को भी स्वीकार किया। इसके साथ यह भी माना कि परिवर्तन के पीछे स्वयं ही कुछ नियम और शक्तियां कार्य करती हैं। इससे साफ जाहिर है कि इन विचारकों के चिंतन में वैज्ञानिकता का प्रभाव था।

तृतीय चरण — कुछ हद तक इस काल में ही, जो 15वीं शताब्दी से आरंभ होता है, समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि तैयार होती है। इसमें सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर विस्तृत चर्चाएं देखने को मिलती हैं। हॉब्स, रूसो, लॉक आदि दार्शनिकों ने समाज के उद्भव आदि की विस्तार से चर्चा की। इसी समय सामाजिक समझौते का सिद्धांत (Social contract theory) प्रतिपादित किया गया। टॉमस मोर ने अपनी पुस्तक Utopia में अनेक सामाजिक समस्याओं की चर्चा की।

चतुर्थ चरण — चतुर्थ चरण में ही सही मायने में समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि तैयार हुई। परंतु समाजशास्त्र का विकास एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं बीसवीं सदी के प्रारंभिक काल में हुआ है। यह आधुनिक समाजशास्त्र का निर्माण काल (formative Period) कहा जाता है। चतुर्थ चरण के प्रमुख सामाजिक चिंतकों के मॉन्टेस्क्यू, [illegible] मार्क्स आदि के नाम विशेष [illegible] उल्लेखनीय हैं जिन्होंने [illegible] प्रदान एवं विकास किया। औद्योगिक [illegible] क्रांति इस काल की [illegible]

घटनाओं में से है। इन घटनाओं ने पुरानी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं को झकझोर दिया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में काफी नये परिवर्तन आए, जैसे कल-कारखानों का विकास, आधुनिक मुद्रा व्यवस्था, बड़े मात्र उत्पादन (Mass Production), मजदूरी व्यवस्था में परिवर्तन आदि। दूसरी तरफ सामाजिक क्षेत्र में पुराने सांस्कृतिक मूल्यों एवं धर्म की जड़ें हिलने लगी। Rationalism तथा तर्क का विकास हुआ। गाँव के स्थान पर नगरों का विकास, सामंती वर्ग की जगह औद्योगिक वर्ग का विकास, विस्तृत एवं संयुक्त परिवार के स्थान पर Nuclear family का विकास होने लगा। राजनीतिक क्षेत्र में वैयक्तिक स्वतंत्रता लोकतंत्रीय मूल्यों एवं समानता जैसे विचारों का विकास होने लगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि यूरोप में नए युग का सूत्रपात हुआ और इसी के साथ-साथ कई नई परंपराओं का भी उदय हुआ। समाजशास्त्र के विकास में जिन प्रमुख बौद्धिक परंपराओं का योगदान सबसे अधिक रहा है उन्हें हम 4 भागों में देख सकते हैं :—

1) राजनीतिक दर्शन — उन काल के विचारकों ने आधुनिक

राजनीतिक व्यवस्थाओं, धर्म, प्रजातंत्र के सामाजिक अध्यायों की वृहत चर्चा की। उन लोगों ने पुरानी राजनीतिक मूल्यों एवं परंपराओं को उखाड़ फेंकने का सुझाव दिया। उनका मानना था कि पुराने मूल्यों के आधार पर नये समाज का निर्माण नहीं हो सकता है।

2) इतिहास का दर्शन – इस काल के प्रमुख विचारकों जैसे ह्यूम, हिग हीगल, फर्गुसन, संत सीमॉन, कॉम्टे एवं मार्क्स आदि ने समाज के विकास एवं परिवर्तन का एक नया विश्लेषण एवं दर्शन दिया जिसका बौद्धिक प्रयास आज भी देखने को मिलता है।

3) उद्विकास के जैविक सिद्धांत – लैमार्क एवं डार्विन जैसे विचारकों ने मानव के उद्विकास का एक नया सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसका प्रभाव स्पेंसर तथा मार्गन जैसे विद्वानों के विचारों में भी दिखाई पड़ती है। जैविक उद्विकास के सिद्धांत ने समस्त परंपरागत मान्यताओं को उखाड़ फेंका एवं वैज्ञानिक चिंतन का मार्ग प्रशस्त किया।

4) सामाजिक एवं आर्थिक सुधार का आंदोलन – कुछ विचारकों ने औद्योगिक एवं फ्रांसीसी क्रांति से उत्पन्न विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण पद्धति को प्रयोग पर बल दिया और आज भी सामाजिक सर्वेक्षण का प्रयोग एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में किया जा रहा है।

१. समाजशास्त्र के विकास के संबंध में बॉटमोर के उपर्युक्त विचार से जिटलिन सहमति व्यक्त करते हैं, पर उनका कहना है कि समाजशास्त्र की उत्पत्ति दो विचारधाराओं के बीच अंतःक्रिया से हुई है। प्रथम विचारधारा को प्रगति की विचारधारा (Ideology of Progress) और दूसरी को व्यवस्था की विचारधारा (Ideology of order) की संज्ञा दी है। पहली विचारधारा को 18 वीं सदी की विचारधारा माना जाता है। प्रगति की विचारधारा को मानने वालों की मान्यता यह थी कि समाज प्रकृति का एक अंग है इसलिए प्रकृति का नियम समाज पर भी लागू होता है। सामाजिक वैज्ञानिकों का मुख्य [illegible] उन नियमों की खोज करना है [illegible] नियम से समाज संचालित एवं [illegible] होता है।

दूसरी ओर औद्योगिक क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात [illegible] समाज एक संक्रांति [illegible] पुराने नियम, मूल्य एवं [illegible]

थे और उनकी जगह पर नये
सामाजिक नियम व कानून उदित हो
रहे थे। समाज में व्यापक अव्यवस्था
फैली हुई थी। इसके परिणामस्वरूप
बुद्धिजीवी जगत में एक विरोधी
विचारधारा का विकास 19वीं सदी के
प्रारंभिक काल में हुआ जिसे व्यवस्था
की विचारधारा (Ideology of order)
के नाम से जाना जाता है। इस विचारधारा
का नाम ऐसा इसलिए हुआ है कि
इसे मानने वाले विचारक समाज में
व्यवस्था को पुनः स्थापित करने की बात
करते थे।

चूंकि कॉम्टे का जन्म इसी काल
में हुआ इसलिए वे दोनों तरह की
विचारधाराओं से प्रभावित हुए। कॉम्टे
ने ही सर्वप्रथम समाज के अध्ययन के लिए
एक अलग विज्ञान की कल्पना की। उनके
अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं
का न सिर्फ वैज्ञानिक अध्ययन करेगा
वरन उन समस्त नियमों एवं प्रक्रियाओं
का भी उद्घाटन करेगा जिनके फलस्वरूप
समाज में परिवर्तन होता है या व्यवस्था
बनी रहती है। इस नये विज्ञान का नाम
उन्होंने सर्वप्रथम Social Physics रखा
था और बाद में इसका नाम
Sociologie रखा। इस नवीन विज्ञान
को उन्होंने Science of social

अर्थात् व्यवस्था एवं प्रगति के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया।

समाजशास्त्र का तेजी से विकास मुख्य रूप से फ्रांस, जर्मनी एवं अमेरिका में 20वीं सदी में हुआ है। इसके बावजूद कि ब्रिटेन में बहुत बड़े-बड़े समाजशास्त्री एवं सामाजिक चिन्तक हुए, वहाँ के विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र एक विषय के रूप में काफी देर से अकादमिक सामने आया। 1960 के दशकों तक London School of Economics and Political Science के अलावा वहाँ अन्य विश्वविद्यालयों में नाममात्र का ही समाजशास्त्र था। विश्वविद्यालय स्तर पर अमेरिका में भी समाजशास्त्र इसी सदी के प्रारंभ में प्रचलित हुआ। अमेरिका का येल, कोलम्बिया, शिकागो ~~योगदान दिया, लेकिन [illegible]~~ विश्वविद्यालय ने समाजशास्त्र के प्रचार-प्रसार में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की शुरुआत 1930 के बाद किया। ब्रिटेन विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र 1960 के दशक में आया।

इस प्रकार समाजशास्त्र यूरोप ने पैदा किया और अमेरिका ने [illegible] जहाँ से वह सारी दुनिया में फैला।